वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 122 | बुधवार 30 अगस्त 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

गहलोत कैबिनेट के महत्वपूर्ण फैसले : अब पार्ट टाइम कार्मिकों को भी मिलेंगे सेवानिवृत्ति परिलाभ

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की अध्यक्षता में मंगलवार को सीएमआर में मंत्रिमंडल की बैठक में कई फैसले लिए गए। बैठक में राजस्थान पार्ट टाइम कॉन्ट्रेक्चुअल हायरिंग रूल्स-2023 का अनुमोदन, जयपुर में जेम बोर्स की स्थापना तथा विभिन्न संस्थाओं को भूमि आवंटन किए गए। साथ ही, जीव जन्तु कल्याण बोर्ड का नाम अमृता देवी राज्य जीव जन्तु कल्याण बोर्ड करने का भी बड़ा फैसला किया गया है।

अब पार्ट टाइम कार्मिकों को 3 लाख रुपए तक मिलेंगे परिलाभ

मंत्रिमंडल ने राजस्थान पार्ट टाइम कॉन्ट्रेक्चुअल हायरिंग रूल्स-2023 के प्रारूप का अनुमोदन किया है। इसमें पार्ट टाइम कार्मिकों को सेवा समाप्ति पर 2 से 3 लाख रुपए तक का आर्थिक सहायता पैकेज मिलेगा। ये परिलाभ विभागों में कार्यरत पार्ट टाइम कार्मिकों को सेवा समाप्ति, मृत्यु एवं सेवानिवृत्ति पर दिए जाएंगे।

जयपुर में बनेगा राज्य का पहला जेम बोर्स

जयपुर में जेम बोर्स की स्थापना व विकास के लिए लगभग 44 हजार वर्ग मीटर भूमि आरक्षित दर पर उपलब्ध करवाने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। यह भूमि औद्योगिक आरक्षित दर से 3 गुना दर पर 99 वर्ष की लीज पर आवंटित की जाएगी। लगभग 60 हजार लोगों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर मिलेंगे। राज्य जीव जन्तु कल्याण बोर्ड का नाम अब ''अमृता देवी राज्य जीव जन्तु कल्याण बोर्ड'' होगा। इसके अलावा मंत्रिमंडल ने नेत्रहीन विकास संस्थान की ओर से संचालित प्रज्ञा चक्षु उच्च प्राथमिक विद्यालय, फलौदी को निःशुल्क भूमि आवंटन का फैसला किया है। वहीं नाथद्वारा क्षेत्र में विशाल उद्यान निर्माण एवं एम्यूजमेंट पार्क परियोजना के लिए तत्पदम उपवन प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी को 6970 वर्ग मीटर भूमि पार्किंग प्रयोजनार्थ उपलब्ध करवाई जाएगी।

नौ परियोजना निदेशक अब माने जाएंगे राज्य कर्मचारी: बैठक में राजस्थान सिविल सेवा में कार्मिकों को नियुक्ति तिथि से नियमित करने का निर्णय लिया है। जिला महिला विकास अभिकरणों के 9 परियोजना निदेशकों को नियुक्ति तिथि से नियमित राज्य कर्मचारी माना जाएगा।

रोटरी क्लब जयपुर एमरल्ड का इन्स्टॉलेशन समारोह संपन्न

मनीष गुप्ता बने अध्यक्ष

जयपुर. कासं। रोटरी क्लब जयपुर एमरल्ड टीम अभिगम का 7वां इन्स्टॉलेशन समारोह आरएएस क्लब में हुआ। मुख्य अतिथि सांसद रामचरण बोहरा, विशिष्ट अथिति रो. डॉ अशोक गुप्ता, बीजेपी राजस्थान के सह- कोषाअध्यक्ष डॉ. श्याम अग्रवाल, इंस्टालेशन ऑफिसर निर्मल कुणावत, चार्टेड प्रेजिडेंट डॉ. गोपाल शर्मा, अस्सिटेंट गवर्नर विमल कुमार सिंघवी रहे। रोटरी क्लब के सदस्यों की उपस्थिति में मनीष गुप्ता को लगातार दूसरी बार क्लब के अध्यक्ष, दुष्यंत मेहता को सचिव और अभिषेक सिंह को कोषाध्यक्ष के पद की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर मेंबर्स को भी शपथ दिलाई गई।

रक्षाबंधन पर 100 साल बाद बना महासंयोग, दिन में नहीं रात को बंधेगी राखी, यह रहेगा श्रेष्ठ मुहूर्त

जयपुर. शाबाश इंडिया

बुधादित्य योग के साथ राजयोग के संयोग के बीच आज भाई-बहन के स्नेह का पर्व रक्षाबंधन मनाया जा रहा है। आज पंचमहा योग के बीच धनिष्ठा नक्षत्र का भी संयोग है। हालांकि आज दिनभर भद्रा का साया रहने से रात 9 बजकर 02 मिनट बाद ही राखी बांधने का मुहूर्त रहेगा। जबकि शहर के आराध्य गोविंददेवजी सहित अन्य मंदिरों में दूसरे दिन राखी बंधेंगी। ऐसे में कुछ घरों में दूसरे दिन सुबह भी राखी बांधी जाएगी। ज्योतिषाचार्य पं. चन्द्रशेखर शर्मा ने बताया कि श्रावण पूर्णिमा सुबह 10.59 बजे से 31 अगस्त को सुबह 7 बजकर 06 मिनट तक रहेगी। इसके साथ ही आज सुबह 10.59 बजे से रात 9.02 बजे तक भद्रा रहेगी। ऐसे में दिनभर भ्रदा का साया रहने से रात को ही राखी बांधने का मुहूर्त रहेगा। रात 9 बजकर 02 मिनट से मध्यरात्रि 12 बजकर 28 मिनट तक राखी बांधी जा सकेगी। इस बीच राखी बांधने के लिए प्रदोष काल मुहूर्त रात 9.02 बजे से 9.09 बजे तक श्रेष्ठ मुहूर्त रहेगा। आवश्यकता हुई तो 31 अगस्त को सुबह 06.09 बजे से सुबह 9.27 बजे तक भी राखी बांध सकते है।

पंच महायोग भी

आज चन्द्रमा और शनि, सूर्य और बुध की युति 100 से अधिक साल बाद हो रही है। सूर्य स्वराशि सिंह में रहेंगे, वहीं शनि स्वराशि कुंभ में विराजमान है। वहीं बृहस्पति अपनी मित्र राशि मेष और बुध भी अपनी मित्र राशि सिंह में विराजमान होने से पंच महायोग का संयोग भी बन गया है।

रक्षाबंधन पर भद्रा का समय

भद्रा शुरू – सुबह 10.59 बजे
भद्रा पूंछ काल - शाम 5.30 - शाम 6.31 बजे
भद्रा मुख - शाम 6.31 बजे से रात 8.11 बजे
भद्रा का अंत - रात 9.02 बजे

धर्म रक्षा का महापर्व है रक्षा बंधन

आज ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक्

शाबाश इंडिया

जैन धर्मावलंबियों द्वारा एक दूसरे का आदर करने, सहायता करने, सुरक्षा करने की भावना से मनाया जाता है रक्षाबंधन का पर्व। जैन धर्म के 19 वें तीर्थंकर भगवान मल्लिनाथ स्वामी के समय में हस्तिनापुर में महापद्म नामक चक्रवर्ती का राज्य था। उनकी रानी लक्ष्मी मति और दो पुत्र विष्णुकुमार और पद्म थे। जब राजा महापद्म को सांसारिक भोगों के प्रति वैराग्य हुआ साथ ही दीक्षा लेने का विचार किया और राजा ने अपना राज्य अपने बड़े पुत्र को देने का निश्चय किया, तो विष्णु कुमार ने राज्य लेने से मना कर दिया। विष्णु कुमार ने अपने पिता से पूछा कि आप यह चक्रवर्ती का पद, छह खंड का साम्राज्य, पूरा भरत क्षेत्र क्यों छोड़ रहे हो? तब राजा महापद्म ने कहा कि अब मैं जान गया हूँ कि इस संसार में सार नहीं है ।तत्वज्ञानी विष्णु कुमार ने पूंछा कि जब इस संसार में कोई सार नहीं है और आप स्वयं भी जब इस संसार को छोड़ रहे है, तो क्या आपको इस तरह की असार वस्तु को अपने बेटे को भेंट करना चाहिए ? जो सच्चे पिता होते हैं, वो अपने बेटे को अच्छी चीज ही देते हैं । पिता से कहा कि इस असार संसार से मुझे भी अब वैराग्य हो गया है और स्वयं भी दीक्षा लेने की अनुमति मांगी ।तब राजा महापद्म ने अपने छोटे पुत्र पद्म को पूरा राज्य दे दिया। फिर राजा महापद्म तथा उनके सुपुत्र विष्णु कुमार ने जाकर सागरचन्द्र आचार्य से दीक्षा ले ली। शीघ्र ही महापद्म मुनिराज ने घातिया कर्मो को नष्ट कर केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया और फिर मोक्ष में चले गये। लेकिन मुनि विष्णु कुमारजी घनघोर तपस्या में लीन रहे। तपस्या करते-करते उन्हें बहुत सी ऋद्धिया प्राप्त हो गयी। एक दूसरी घटना क्रम में अवन्ती देश की उज्जयिनी नगरी में राजा श्री वर्मा राज्य करते थे। उसके यहाँ चार मंत्री थे बलि, ब्रहस्पति, प्राद और शुक्र।इन चारों की धार्मिक मान्यताये राजा से अलग प्रकार की थी। एक बार परमयोगी दिगम्बर जैन मुनि अकंपनाचार्य अपने सात सौ मुनि शिष्यों के साथ ससंघ उज्जयिनी नगरी आए । तब उज्जयिनी के राजा और सारी प्रजा अष्ट द्रव्य का थाल सजा कर अत्यंत उत्साहपूर्वक मुनिराजो के दर्शन के लिए निकलती है। उसी समय मुनिश्री अकंपनाचार्य को अपने अवधिज्ञान से पता चला जाता है कि इस राज्य के सभी मंत्री दूसरे धर्म को मानने वाले हैं, इसलिए इस राज्य में किसी भी तरह का किसी से भी वार्तालाप, चर्चा या संपर्क मुनिसंघ के हित में नहीं है। इसलिए उन्होंने सारे संघ को मौन धारण करने का आदेश दे दिया। जब राजा और प्रजा ने वहां पर जाकर वंदना करने के पश्चात मुनिराजों से निवेदन किया कि हे ज्ञानवान गुरुवर, हमें धर्म का उपदेश दीजिये, जिससे हम अपने सम्पूर्ण जीवन को सफल बना सके, लेकिन किसी भी मुनिराज ने कोई भी जवाब नहीं दिया, क्योकि सब साधु मौन थे, प्रयास करने पर भी किसी भी मुनिराजों ने अपना मौन नहीं खोला, तब इन चारों मंत्रियो ने राजा को बोला कि अरे ये मुनिराज तो निरे अंगूठे-छाप हैं इनको कुछ आता नहीं है। अगर इन मुनिराजो को कुछ आता होता, तो ये ऐसे मौन नहीं रहते। बस जैन साधु बनने पर इनको सम्मान, भोजन आदि मिल जाता है। यही कारण इनकी जैनेश्वरी दीक्षा लेने का है इसके सिवा कोई और कारण नहीं है, आप इनसे धर्म का स्वरुप पूछ रहे हैं लेकिन ये सब मुनि जानते हैं कि इनको कुछ नहीं आता है। हे राजन, जब आपके साथ हमारे सरीखे इतने विद्वान मंत्री हैं, तो ये कैसे कुछ बोले? अतः ये चुप ही रह रहे हैं और कुछ नहीं बोल रहे हैं। इसके बाद राजा के साथ वे सब नगर की और लौटने लगे। तब रास्ते में इसी संघ के एक श्रुतसागर नामक मुनिराज को आता देख, इन चारो मंत्रियों में से एक मंत्री ने कहा कि अरे देखो, कैसा जवान बैल

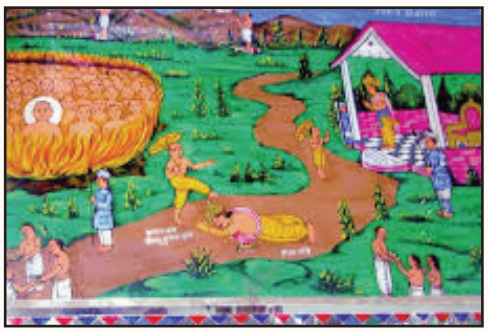

चला आ रहा है ।इन मुनिराज को पता नहीं था कि आचार्य श्री ने सबको मौन रहने आदेश किया है,अतः इन मुनिराज ने मौन व्रत नहीं लिया था इसलिए इन्होंने स्यात शब्द बोला, तो राजा को लगा ये साधु तो मौन नहीं है, तब राजा ने इसका अर्थ पूछा । तब मुनिराज बोलते हैं कि इस संसार में भ्रमण करने वाला जीव कभी बैल योनी में भी उत्पन्न हो जाता है, बैल में जवानी की दशा भी बनती है, तो उस भूतपूर्व अवस्था से आपके मंत्रियों ने सही कहा है । तो एक मंत्री ने कहा की क्या आप पुनर्जन्म मानते है ? किसने देखा है पुनर्जन्म? जो आँखों से नहीं देखा सा सकता, वो सत्य कैसे हो सकता है? तब मुनिराज तत्काल उत्तर देते हैं कि तुम्हारे माता, पिता की विवाह विधि हुई थी। क्या वो तुमने देखी थी? वो मंत्री कहता है कि हाँ हुई थी, तब मुनि बोलते हैं कि तुम कैसे कह सकते हो कि विवाह विधि हुई थी। तो मंत्री बोलता है कि हुई तो थी, लेकिन तुम तो बोल रहे हो कि जो आँखों से दिखता है, वही सच होता है। तो मंत्री बोलता है कि मैंने सुना है तो फिर मुनि बोले कि फिर तुम्हारी पहली बात झूठी सिद्ध हो रही है ये सुनते ही उस मंत्री को कुछ जवाब समझ में नहीं आया, तो फिर मुनिराज बोले कि जो हम आत्मा, परमात्मा की धारणा को लेकर चल रहे हैं, वो भी हमने सुनी है, हमने हमारे सदगुरु से, उन्होंने गणधर परमेष्ठी से, गणधर परमेष्ठी ने उनके गुरु तीर्थंकर भगवान झ्र सर्वज्ञ से ये बात सुनी है इस तरह अनादिकाल से आजतक यह मान्यता चली आ रही है।इसलिए हम भी उस पर अविश्वास नहीं करते हैं। इस प्रकार इन मंत्री के पास अब कोई जवाब नहीं था, अतः ये चारो मंत्री उन मुनिराज से परास्त हो गए जो ज्ञानी महात्मा हैं, जिनको चारो अनुयोगो का ज्ञान है, उन आत्मज्ञानी महापुरुष को कोई जीत नहीं सकता। वाद-विवाद में उनको कोई पराजित नहीं कर सकता है। जो लोग थोडा बहुत पढ़ कर तर्क-वितर्क करने लग जाते हैं, वो अपनी ही बात से खुद ही पराजित हो जाते हैं । इस तरह स्यादवाद के धारक मुनिराज ने सबको पराजित कर दिया और वो सब मंत्री गण परास्त होकर म्लान मुख हो चले जाते हैं। इसके बाद मुनि श्रुतसागर जी आचार्य अकम्पनाचार्य जी के पास जाते है तथा उनको सब मंत्रियों से हुए समस्त वार्तालाप को बता देते हैं कि रास्ते ये घटना हुई तो मुझे थोड़ा सा शास्त्रार्थ करना पड़ा और वो परास्त हो गये तब वे आचार्य बोलते हैं कि तुमने मुनि संघ के ऊपर संकट ला दिया है और पुनः उसी स्थान पर चले जाने व कायोत्सर्ग मुद्रा में मौन होकर खड़े हो जाने कहा ।अब इस संकट से बचने का एक मात्र उपाय यही हो सकता है । इस तरह गुरु की आज्ञा की अनजाने में जो भूल हो गयी है, उसका भी प्रायश्चित हो जायेगा। तब वे मुनि श्रुतसागर आचार्यश्री को नमस्कार कर चले गए और उसी स्थान पर जाकर कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़े हो गये। उधर उन चारो मंत्रियो ने बैठक में विचार किया कि इन साधुओं के कारण हमारी ऐसी बदनामी हुई है, अतः हम अब इन सब मुनियों को मार डालेंगे, तो दूसरा बोला कि सब मुनियों की हत्या करना व्यर्थ है । अंत में निर्णय यह निकलता है कि जिस मुनि के कारण हमको इतनी बदनामी हुई है, उसी मुनि की हत्या करनी चाहिए अतः अब हम रातो-रात उस मुनि को मार डालेंगे। फिर चारो मंत्रीगण रात को उसी मार्ग से निकलते हैं रास्ते में चांदनी रात में श्रुतसागर मुनिराज को कायोत्सर्ग मुद्रा में देख कर पहचान लेते हैं और सोचते हैं कि चलो अच्छा हुआ, हमारा दुश्मन तो यही खड़ा है चारो मंत्रियों ने तलवार उठा ली और जैसे ही वो मारने को होते हैं, तब उस जगह का वन देवता उनके हाथो को कीलित कर देता है, जिससे उनके शरीर जकड़ जाते हैं और वे रात भर इसी मुद्रा में खड़े रह जाते हैं। सुबह जब जनता मुनिराजो को वंदना के लिए निकलती है, तब रास्ते में इन दुष्टों को मुनिराज को मारने के लिए तलवार उठाये कीलित मुद्रा में देख कर अत्यंत क्रोधित होकर राजा को बताती है तब राजा बहुत कुपित होता है कि इन दुष्टों ने इतना नीचा कार्य करने की कोशिश की फिर राजा उन चारो मंत्रियो को अपमान पूर्वक देश निकाले का दंड देकर अवन्ती देश से निष्काषित कर देते हैं । इसी बीच हस्तिनापुर के राजा पद्म पर सिंहबल नामक राजा चढ़ाई करता है, तब ये चारो मंत्री अपने छल-बल से सिंहबल राजा को बंदी बनाकर राजा पद्म के सामने ले आते हैं तब राजा पद्म बहुत प्रसन्न होता है, और बोलता है कि तुम सभी को मैं मंत्री बनाता हूँ और साथ में तुमको अगर कोई वरदान मांगना हो, तो मांग लो। बलि मंत्री बोला, जब वक़्त होगा तब मागेंगे और इस तरह वो सभी हस्तिनापुर राज्य के मंत्री बन जाते हैं एक बार इस राज्य में भी अकम्पनाचार्य आदि सात सौ मुनिराजो का संघ चातुर्मास के लिए आता है। अब जैसे ही इन मंत्रियों को इस बात का पता चलता है, वे सभी राजा पद्म के पास जाते हैं और राजा से वरदान में सात दिन का राज्य मांगते हैं। अब ये चारो मंत्री राजा बनते ही मुनिसंघ के चारो ओर एक बाड़ी लगा देते है फिर उसमे अग्नि जलाकर यज्ञ प्रारंभ करते हैं और लकड़ी आदि जलाने लगते हैं तब चारो ओर बहुत सारा धुवाँ फैल जाता है । यह धुवां मुनिराजों के गले, नासिका में चले जाने से मुनिराजो को अत्यंत कष्ट हो जाता है लेकिन फिर भी वो सभी मुनिराज समता धारण कर वही पर अपने आत्म चिन्तन में लीन हो जाते हैं और आहार-जल का त्याग कर देते हैं। इधर इस यज्ञ का धुवाँ दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा था और मुनिराजों का दर्द भी बढ़ता जा रहा था। छठी रात को इस अत्यंत पीड़ादायक घटना से श्रवण नक्षत्र भी कम्पायमान हो उठता है। इस स्थल से बहुत दूर विराजमान अवधिज्ञान के धारी आचार्य सागरचन्द्रजी ने इस कम्पित नक्षत्र को देखकर जाना कि ये बहुत अमंगलकारी अशुभ संकेत है और फिर वे मुनिराज अपने अवधिज्ञान से जान गए कि अकम्पनाचार्य आदि सात सौ मुनिराजों पर प्राण संकट आया हुआ है तब एकदम से उनके मुख से आहह्व ! ये शब्द निकलते हैं। तब उन्होंने संघ में एक क्षुल्लकजी जिनके पास आकाशगामिनी विद्या थी, उनको आधी रात को ही बुलाया और बोला कि तुम तत्काल जाकर धरणीभूषण पर्वत पर विराजमान विष्णु कुमार मुनि को जाकर बता देना कि वे विक्रिया ऋद्धिधारी मुनि हैं और इन 700 मुनिराजों पर आये इस भीषण संकट का निवारण सिर्फ वे ही कर सकते हैं। तब वे क्षुल्लक जी आकाश मार्ग से चले जाते है और विष्णु कुमार मुनि को सब बताते हैं. तब इन मुनिराज को याद आता है कि हस्तिनापुर का राज्य तो मेरे पूर्व भाई का राज्य है. फिर उनके राज्य में 700 मुनिराजों पर यह विकट संकट कैसे आया? साथ ही उनको खुद की कठोर तपस्या में लीन रहने से यह पता ही नहीं चला था कि उनको विक्रिया ऋद्धि प्राप्त हो गयी है अतः वे मुनिराज इस ऋद्धि को जांचने के लिए अपना हाथ आगे बढाते हैं, तो वो उनका हाथ पर्वतो को पार करता हुआ, समुद्रो को पार करता हुआ, मनुष्य लोक की अंतिम सीमा तक चला गया और फिर उन्होंने अपने हाथ को वापस कर लिया और समझ गए कि मुझे ये ऋद्धि तो प्राप्त हो गयी है। निरंतर

संकलन
भागचंद जैन मित्रपुरा
अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर

विद्याधर नगर में 13 से 30 अक्टूबर तक आयोजित होगा दशहरा महोत्सव-2023

15 से 17 अक्टूबर तक रामकथा मर्मज्ञ कवि डॉ. कुमार विश्वास सुनाएंगे रामकथा

जयपुर. शाबाश इंडिया

विद्याधर नगर स्टेडियम आयोजन समिति के तत्वावधान में 13 से 30 अक्टूबर तक दशहरा महोत्सव 2023 का आयोजन किया जाएगा। समिति अध्यक्ष नरेन्द्र कविया और सचिव अनिल संत ने जानकारी देते हुए बताया कि 15 से 17 अक्टूबर तक विश्वविख्यात रामकथा मर्मज्ञ डॉ. कुमार विश्वास अपने-अपने राम के माध्यम से श्रोताओं को रामकथा सुनाएंगे।

म्यूजिकल डांडिया नाइट्स विद बॉलीवुड स्टार्स

18 से 23 अक्टूबर तक बॉलीवुड स्टार्स के साथ भव्य म्यूजिकल डांडिया नाइट्स का आयोजन होगा। इस श्रंखला में 18 को गिप्सी सेंड ड्यूंस ग्रुप, 19 को हीना पांचाल और 20 अक्टूबर को गुल सक्सैना, आलोक कटघरे, गुंजन रस्तोगी और विनीत रघुवंशी के गीतों के साथ प्रतिभागी डांडिया रास करेंगे। इसी प्रकार 21 अक्टूबर को लक्की अली और हीना सैन, 22 को सारिका सिंह और 23 को डीजे अकीरा के गीतों के साथ प्रतिभागी डांडिया कर सकेंगे।

भव्य होगा रावण दहन

24 अक्टूबर को भव्य आतिशबाजी और लाइव बैंड की प्रस्तुतियों के साथ प्रदेश के सबसे बड़े रावण का दहन किया जाएगा। दशहरा महोत्सव के दौरान खाने-पीने और खरीदारी की स्टालें महोत्सव स्थल पर लगेगी वहीं आगंतुकों के लिए झूले, गेम खेलने और मस्ती की पूरी सुविधा मेला ग्राउंड पर रहेगी।

एनएसपी स्कूल में राखी प्रतियोगिता संपन्न

रावतसर. शाबाश इंडिया। आज स्थानीय एन एस पी स्कूल, रावतसर में राखी महोत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें सुंदर राखी बनाओ, थाली डेकोरेशन, राखी पेंटिंग तथा राखी रंगोली की प्रतियोगिता रखी आयोजित की गयी । जिसमें बच्चों ने नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक के बच्चों ने भाग लिया। विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में पुरस्कृत किया जायेगा। इसके पश्चात प्रकृति संरक्षण का संदेश देते हुए वृक्षों को राखी बाँधकर 'वृक्षाबंधन' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. सुभाष सोनी, कार्यक्रम अध्यक्ष सुरेन्द्र शर्मा, प्रधानाचार्य सुनील नागपाल, प्रबंधक पंकज शर्मा आदि ने विद्यार्थियों को वृक्षों के प्रति प्रेम, इनकी रक्षा एवं वृक्षारोपण के महत्व को समझाया। बच्चों को प्रकृति के संरक्षण की शपथ दिलवाई तथा उन्हें भविष्य में पेड़ों की उचित देखभाल के लिए प्रेरित किया गया। इसके बाद मेजर ध्यानचंद के जन्मोत्सव को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया गया जिसमें चम्मच दौड़, बाधा दौड़, लंगड़ी टांग, रिले दौड़, हॉकी आदि खेल खिलाये गए। कार्यक्रम में नेहा कुक्कड़, भागवन्ती, रिद्धि, नंदिनी, रानी कौर, अनीता, लक्ष्मी, सरोज, ममता, रितिका आदि शिक्षिकायें उपस्थित रहीं।

साइन्स एकेडमी में दो दिवसीय इन्टर हाउस टुर्नामेंट का आयोजन

रावतसर. शाबाश इंडिया। मेजर ध्यानचंद की स्मृति में किया गया खेल प्रतियोगिता का शुभारम्भ डॉ. सुभाष सोनी, सुरेन्द्र शर्मा, सुनील नागपाल, पंकज , राजेन्द्र , जगदीश , नेहा मेम तथा रेणु मेम के कर कमलों द्वारा किया गया। मेजर ध्यानचंद की स्मृति में राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में आयोजन किया गया। डॉ. सुभाष सोनी ने जीवन में खेलों के महत्व पर प्रकाश डाला। सुरेन्द्र शर्मा ने मेंजर ध्यानचंद की जीवनी पर प्रकाश डाला। सुनील नागपाल ने भी खेलों के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किये। खो-खो प्रतियोगिता में बालक जूनियर वर्ग में तिलक हाउस व सीनियर वर्ग में सुभाष हाउस ने बाजी मारी। कबड्डी बालक सीनियर वर्ग में रविन्द्र हाउस की टीम विजेता रही। रस्सा कस्सी में बालक वर्ग में रविन्द्र हाउस व बालिका वर्ग में तिलक हाउस टीम विजेता रही। शतरंज बालक वर्ग दिवांशु (तिलक हाउस)से बालिका वर्ग से दिक्षा (सुभाष हाऊस) से, कैरम बालक वर्ग आर्यन (अब्दुल कलाम हाउस) से व समीक्षा (तिलक हउस) से दौड़ प्रतियोगिता में जूनियर बालिका वर्ग में विशाख (अब्दुल कलाम हाउस) सीनियर बालिका वर्ग में पारूल (तिलक हाउस) व बालक वर्ग से जूनियर टीम में अंकित (रविन्द्र हाउस), सीनियर बालक वर्ग में कर्ण (रविन्द्र हाउस) विजेता रहे। दो दिवसीय खेल प्रतियोगिता का समापन सुरेन्द्र शर्मा व सुनील नागपाल ने उत्कृष्ट खिलाड़ियों को सम्मानित कर किया।

वेद ज्ञान

परिश्रम के बगैर जीवन व्यर्थ

परिश्रम के बगैर मनुष्य का जीवन व्यर्थ है। परिश्रम किए बिना मनुष्य को भोजन भी नहीं करना चाहिए वरना वह बीमार पड़ जाएगा। एक कहानी के अनुसार एक राजा वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा था, लेकिन इसके बावजूद उसे लगता था कि वह बीमार है। ऐसे में जो भी डॉक्टर उससे यह कहता कि वह स्वस्थ है, वह उसी को फांसी पर चढ़ाने का आदेश दे देता। अंत में एक डॉक्टर ने राजा से कहा कि आप तो गंभीर रूप से बीमार हैं। यह सुनकर वह खुशी से उछल पड़ा और बोला, यह बताओ कि मुझे क्या बीमारी है। डॉक्टर ने कहा कि आपको एक रहस्यमयी बीमारी है और इसका इलाज यही है कि आप एक दिन के लिए किसी सुखी और प्रसन्न व्यक्ति की कमीज पहनें, लेकिन काफी खोजबीन के बाद भी राजा के सैनिकों को कोई प्रसन्न व्यक्ति नहीं मिला। राजा को जब यह बात मालूम हुई कि उसके राज्य में लगभग सभी दुखी हैं तो वह काफी विचलित हुआ। खैर एक दिन सैनिकों ने देखा कि एक व्यक्ति अपनी ही धुन में खोया हुआ गाना गाते हुए अपने खेत में काम कर रहा है। सैनिकों ने उससे पूछा कि क्या वह अपने जीवन से प्रसन्न है? उस व्यक्ति ने जब इसका उत्तर हां कहकर दिया तो सैनिकों को बहुत खुशी हुई और वे बोले कि क्या वह एक दिन के लिए अपनी कमीज राजा को दे सकता है। इस पर वह व्यक्ति बोला, मैं राजा को अपनी कमीज दे देता, लेकिन मेरे पास तो इसके अलावा दूसरी कमीज ही नहीं है। अगले दिन जब राजा उससे मिलने के लिए अपने महल से बाहर निकला तो चिड़ियों की चहचहाहट, स्वच्छ वातावरण व नए-नए चेहरों को देखकर उसे बहुत अच्छा लगा और वह अपने आपको स्वस्थ महसूस करने लगा। कहने का सार यही है कि प्रकृति द्वारा दिए गए संसाधनों का उपयोग वही व्यक्ति कर सकता है जो परिश्रम में विश्वास रखता है। गीता में भी श्रीकृष्ण परिश्रम का महत्व बताते हुए अर्जुन से कहते हैं कि परिश्रम ही मनुष्य की वास्तविक पूजा-अर्चना है। इसके बिना मनुष्य का सुखी-समृद्ध होना अत्यंत कठिन है। जो व्यक्ति परिश्रम नहीं करता और वह कर्महीन और आलसी है। वह हमेशा दुखी व बीमार और दूसरों पर निर्भर रहता है।

संपादकीय

एथलेटिक्स विश्व चैंपियनशिप में नीरज ने बता दिया-श्रेष्ठ है भारत

हौसला कायम रहता है तो कीर्तिमानों की ओर बढ़ते रहने का सफर आसान हो जाता है। नीरज चोपड़ा के मामले में यह बात हकीकत बन कर सामने आ रही है। वे लगातार अपनी काबिलियत साबित कर रहे हैं। वे हर अगली प्रतियोगिता में पहले से बेहतर प्रदर्शन करते हैं और इसके साथ दुनिया में देश का नाम रोशन करने की उम्मीद को और आगे लेकर बढ़ रहे हैं। रविवार को बुडापेस्ट में चल रहे एथलेटिक्स विश्व चैंपियनशिप में जब उन्होंने 88.17 मीटर भाला फेंका, तब न केवल इस खेल में, बल्कि इस प्रतियोगिता में भारत के लिए पहला स्वर्ण पदक जीता। इसके साथ-साथ उन्होंने अपने प्रदर्शन में लगातार बेहतर करने के सिलसिले को कायम रखा। इस प्रतियोगिता में पाकिस्तान के अरशद नदीम ने 87.82 मीटर की दूरी तक भाला फेंक कर दूसरा स्थान हासिल किया और रजत पदक जीता। 86.67 मीटर के आंकड़े के साथ तीसरे स्थान पर चेक गणराज्य के याकूब वाडलेच रहे और उन्होंने कांस्य पदक जीता। गौरतलब है कि नीरज चोपड़ा ने तोक्यो ओलंपिक में जब स्वर्ण पदक जीत कर इतिहास रचा था, तब एथलेटिक्स में देश के लिए एक बार फिर नई उम्मीद पैदा हुई। उसके बाद एक तरह से उन्होंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। उनका लक्ष्य 90 मीटर से आगे जाने का है। पहले ओलंपिक की कामयाबी की उड़ान भरने के बाद अब विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में भी नीरज चोपड़ा ने स्वर्ण पदक अपने नाम किया। हालांकि यह भी तथ्य है कि भालाफेंक के ताजा प्रदर्शन में उन्होंने दूरी का जो आंकड़ा छुआ, वह उनके सर्वश्रेष्ठ पांच प्रदर्शनों में शामिल नहीं है। बल्कि इस प्रतियोगिता के पहले चक्र में उनके प्रदर्शन को 'फाउल' में गिना गया। लेकिन अगले ही चक्र में उन्होंने अपने भरपूर आत्मविश्वास के बूते जबर्दस्त वापसी की। इसके बाद अगर उन्होंने इसमें सर्वश्रेष्ठ का तमगा हासिल किया, तो इससे भविष्य के लिए एक शानदार उम्मीद पैदा होती है। सच यह है कि हंगरी में आयोजित विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में पहुंचने से पहले ही उन्होंने लगभग सभी प्रतियोगिताओं में जैसा प्रदर्शन किया था, उससे उनकी इस उपलब्धि की कड़ियां जुड़ी हुई थीं। दरअसल, अपने प्रदर्शनों में नीरज चोपड़ा 88 मीटर की दूरी को दस बार पार कर चुके हैं और उनका अब तक का सर्वश्रेष्ठ हासिल 89.94 मीटर का रहा है। जाहिर है, विश्व चैंपियनशिप में उनकी इस जीत और बेहतर प्रदर्शन से और बेहतर नतीजों की संभावना पैदा होती है। गौरतलब है कि इस प्रतियोगिता में नीरज चोपड़ा से पीछे रह कर दूसरा स्थान हासिल करने वाले पाकिस्तान के अरशद नदीम राष्ट्रमंडल खेलों में 90 मीटर की दूरी को पार कर चुके हैं। हालांकि इस बार शुरूआती कई चक्रों में वे भी पिछड़ गए थे। भारत के लिहाज से इस प्रतियोगिता का एक खास पहलू यह रहा कि एक ओर नीरज चोपड़ा सबसे पहले स्थान पर रहे, तो दूसरी ओर भारत के ही किशोर जेना पांचवें और डीपी मानू छठे स्थान पर रहे। यानी इस खेल में भारत के पास एक शृंखला खड़ी हो रही है, जो नीरज चोपड़ा के समांतर भविष्य की चुनौतियों के मैदान में खड़े होंगे।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

खुदकुशी के परिसर

राजस्थान का कोटा शहर अब विद्यार्थियों की खुदकुशी के चलते अधिक सुर्खियों में रहता है। बीते रविवार को दो छात्रों ने चार घंटे के भीतर आत्महत्या कर ली। इस तरह इस साल जनवरी से लेकर अब तक वहां खुदकुशी करने वाले छात्रों की संख्या बढ़ कर चौबीस हो गई है। कोटा दरअसल इंजीनियरिंग और चिकित्सा पाठ्यक्रमों में दाखिले की कोचिंग के लिए प्रसिद्ध हो चुका है। देश भर से छात्र वहां जाकर कोचिंग लेते हैं। उनमें से बहुतों को कामयाबी मिल जाती है। मगर पिछले कुछ वर्षों से देखा जा रहा है कि जिन छात्रों का प्रदर्शन बेहतर नहीं रहता, उनमें आत्मघाती प्रवृत्ति विकसित होने लगी है। इसलिए पिछले कई वर्षों से इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए कोचिंग संस्थानों से उपाय निकालने को कहा जा रहा है। उनमें से बहुत सारे संस्थानों ने इसके उपाय जुटाए भी हैं, मगर अब भी यह समस्या गंभीर बनी हुई है। रविवार को दो छात्रों की खुदकुशी के बाद राज्य सरकार ने आदेश जारी कर दिया है कि अगले दो महीने तक कोई भी कोचिंग संस्थान अपने यहां परीक्षण कार्यक्रम नहीं चलाएगा। रविवार को जिन दो छात्रों ने खुदकुशी की, उनका परीक्षण में प्रदर्शन अच्छा नहीं बताया जा रहा है। छात्रों की बढ़ती खुदकुशी की घटनाओं से स्वाभाविक ही यह सवाल उठता है कि आखिर हमने कैसी शिक्षा व्यवस्था विकसित की है, जिसमें युवा मामूली विफलता पर भी जान देने का फैसला कर लेते हैं। उनके पालन-पोषण और सामाजिक ताने-बाने पर भी सवाल उठता है कि आखिर वे युवाओं में इतना साहस क्यों नहीं पैदा कर पाते कि डाक्टर-इंजीनियर न बन पाने पर दूसरे विकल्प का चुनाव कर सकें। उन्हें अपने परिवार और समाज से यह भरोसा क्यों नहीं मिल पाता कि अगर जीवन में डाक्टर या इंजीनियर नहीं बन पाए तो उन्हें फिसड्डी नहीं माना जाएगा। दरअसल, हमारे समाज में कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि उन्हीं बच्चों को अधिक काबिल और मेधावी माना जाता है, जिनका दाखिला इंजीनियरिंग और चिकित्सा पाठ्यक्रमों में हो जाता है। इस तरह स्कूली दिनों से ही बहुत सारे बच्चों पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनना शुरू हो जाता है कि उन्हें आगे की पढ़ाई के लिए किसी इंजीनियरिंग या मेडिकल संस्थान में दाखिला लेना है। चूंकि इन पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए प्रतियोगी परीक्षा कुछ कठिन और प्रतिस्पर्धा कड़ी होती है, इसलिए बड़ी संख्या में छात्र दाखिले से वंचित रह जाते हैं। हालांकि विद्यार्थियों पर ऐसे मनोवैज्ञानिक दबाव को कम करने के लिए स्कूली स्तर पर कई कार्यक्रम चलाए जाते हैं। उन्हें लगातार परामर्श दिया जाता है कि जीवन में संभावनाएं अनंत हैं, किसी एक विकल्प को अंतिम मान कर नहीं चलना चाहिए। मगर जिस तरह हमारे देश में अच्छी नौकरियों की गुंजाइश कम होती गई है, उसमें तकनीकी शिक्षा के प्रति रुझान अधिक अधिक देखा जाने लगा है। फिर इंजीनियरिंग और चिकित्सा की पढ़ाई करने के बाद विदेशों में अच्छे वेतन वाली नौकरियों का आकर्षण भी भरपूर है। ऐसे में हर माता-पिता का सपना होता है कि उसका बच्चा किसी अच्छी जगह नौकरी करे।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल का अधिवेशन इंदौर में हुआ संपन्न

इंदौर. शाबाश इंडिया

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल का एक दिवसीय अधिवेशन राष्ट्रीय अध्यक्ष शिखरचंद्र पहाडिया के मुख्य आतिथ्य तथा अशोक जैन बड़जात्या राष्ट्रीय अध्यक्ष दिगंबर जैन महासमिति की अध्यक्षता में इन्दौर के साउथ तुकोगंज स्थित सभागार मे आयोजित किया गया। अधिवेशन के प्रारंभ में तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल अध्यक्ष डी. के. जैन ने स्वागत उद्बोधन एवं अतिथियों का स्वागत किया । कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री संतोष पेंढारी नागपुर ने राष्टीय और मध्यांचल महामंत्री डॉ. संजय जैन ने मध्यांचल की गतिविधियों को बताया। राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री, उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र अंचल अध्यक्ष सहित अनेक तीर्थक्षेत्रों के पदाधिकारी एवं सैकड़ों की संख्या में पहुंचे सदस्यों के बीच दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक जैन बडजात्या ने ₹ गिरनारजी जैन तीर्थक्षेत्र पर चौथी टोंक ₹ के विकास का प्रजंटेशन दिया तो लोगों ने खुशी जाहिर कर तालियां बजाईं। इस अवसर पर उपस्थित अनेक उद्योगपतियों एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने भी बडजात्या को आश्वस्त किया कि आप गिरनार जी में कार्य प्रारंभ करवाये, हम आपको आवश्यकतानुसार दानराशि सहित सहयोग देकर इसे पूर्ण करवाने के सहभागी रहेंगे। श्री बडजात्या भी काफी भावुक हो गए और खुशी जाहिर की। इस मौके पर विशिष्ट अतिथि उद्योगपति भरत मोदी इन्दौर ने गोमटगिरि जैन तीर्थ के संबंध में जानकारी देते हुए अतिक्रमणकारियों से मुक्त करानें तथा मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष शिखरचंद्र पहाडिया मुम्बई एवं विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नीलम जी अजमेरा उस्मानाबाद , महाराष्ट्र मध्यांचल अध्यक्ष अनिल जमगे सोलापुर , दिगम्बर जैन समाज (सामाजिक संसद) इंदौर अध्यक्ष नरेंद्र वेद ने शिखरजी गिरनार जी , गोमटगिरि सहित अनेक तीर्थक्षेत्रों की वर्तमान परिस्थितियों को रखते हुए संरक्षण संवर्धन व भविष्य को लेकर गम्भीरता बताई और अपने सुझाव दिए। इस मौके पर श्री दिग.जैन सिद्धक्षेत्र (रेशंदीगिरि) नैनागिरि , द्रोणगिरि , आहार तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी राजेश जैन रागी, देवेन्द्र लुहारी, महेन्द्र बड़ागांव ने क्षेत्र का ऐतिहासिक परिचय व महत्व बताते हुए तीर्थ विकास कार्यों को लेकर प्रोजेक्ट प्राक्कलन राष्ट्रीय व मध्यांचल कमेटी अध्यक्ष व पदाधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत किये, जिस पर इन तीनों क्षेत्र हेतु पांच पांच लाख रुपए तथा इलेक्ट्रॉनिक मशीन की स्वीकृति दी तथा बाद में अनुदान राशि बृध्दि करने की बात कहीं और मध्यांचल की अनुशंसा पर राष्ट्रीय कमेटी द्वारा मध्यांचल से संबद्ध विभिन्न तीर्थक्षेत्रों के विकास हेतु 60 - 70 लाख रुपए सहयोग अनुदान राशि प्रदान करने की घोषणा की। अधिवेशन में विशेष अतिथि डा अनुपम जैन इंदौर, आर के रानेका, धर्मेंद्र सिनकेम , संदीप मोथरा सरिया, अनिल जैनको, भरत जैन इंदौर, अधिवेशन संयोजक जैनेश झांझरी, महावीर बेनाडा, सुदीप जैन , अजय जैन आदि उपस्थित रहे। अधिवेशन का सफल संचालन मध्यांचल महामंत्री डॉ संजय जैन व आभार मध्यांचल अध्यक्ष डी के जैन इंदौर ने व्यक्त किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय एवं मध्यांचल अध्यक्ष तथा पदाधिकारिओं को जैन तीर्थ नैनागिरि कमेटी की ओर से भगवान पारसनाथ के 2800वां निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष में स्मृति चिन्ह भेंटकर अभिवादन किया एवं नैनागिरि में 04 दिसम्बर 2023 से आयोजित होने बाले पंचकल्याणक महोत्सव में तीर्थ क्षेत्र कमेटी का नेमित्तिक अधिवेशन करने हेतु आमंत्रित किया।

देश की तीन संस्थाओं के पदाधिकारी एक मंच पर

मां अहिल्या बाई की नगरी इन्दौर में हुयें इस विशेष अधिवेशन के एक ही मंच पर देश की तीन बड़ी शीर्षस्थ संस्था जो की सौ बर्ष पूर्व से जैन समाज का कुशलतापूर्वक नेतृत्व करती आ रही है उनके अनेक राष्ट्रीय पदाधिकारी विकास की योजनाओं पर गति प्रदान करने हेतु एकसाथ रहें जिसमें भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष शिखर चंद्र जी पहाड़िया, महामंत्री संतोष जी पेंडारी , उपाध्यक्ष नीलम अजमेरा, अनिल जमगे तथा महासभा मध्यांचल- की अध्यक्षा श्रीमती संगीता विनायका तथा महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक जैन बडजात्या , राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोज पाटोदी शामिल है।

बी जे एस महिला विंग की सदस्याओं ने पुलिस कमिश्नर अजय तोमर को राखी बांधी

सूरत. शाबाश इंडिया। रक्षाबंधन पर्व के निमित बी जे एस लेडीज विंग की मेम्बर्स आज 29 अगस्त 2023 को दोपहर 3,15 बजे सूरत शहर के जागरूक एवं संवेदनशील पुलिस कमिश्नर अजय कुमार तोमर के कार्यालय पहुंची व वहां मौजूद बी जे एस की महिला सदस्यों ने तोमर को राखी बांधी व तिलक लगाया तथा मुंह मीठा कराया। अजय तोमर ने अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहा कि आप बहिनें रक्षा बंधन के इस पावन पर्व पर आप सभी रक्षा सूत्र बांधने यहां पहुंची है ये बताइए कि इस शहर में आप सभी सुरक्षित तो है ? तो महिलाओं ने कहा कि सर हम इस शहर में एक दम सुरक्षित है व खुली हवा में सांस ले रही है। माकूल पुलिस व्यवस्था पर हम सभी शहर वासियों को नाज है। इस अवसर पर अनेक सीनियर सिटीजन तथा अन्य महिला ग्रुप भी मौजूद थे। पुलिस विभाग द्वारा सभी आगुन्तकों को अल्पाहार कराया गया। सीनियर सिटीजन ग्रुप में एक 95 वर्षीय इंजीनियर अरविंद भाई वकील भी वहां मौजूद थे जो पांच दशक पूर्व नेहरू ब्रिज के निर्माण में योगभूत बने थे। बी जे एस की लेडीज विंग की प्रभारी मोनिका मांडोत, स्मार्ट गर्ल प्रभारी रुपाली निखाले, निशा सेठिया, विनीता ओरड़िया. प्रतिभा बोथरा, सुगुन डागा, स्मृति , मीना जी बैद, शिल्पा , मनीषा , अंजू , अंकिता , सीमा आदि सदस्याएं उपस्थित थी। इस अवसर पर बी जे एस सूरत के संस्थापक गणपत भन्साली की भी मौजूदगी रही।

गोठी स्कूल में भाई बहनों ने मनाया रक्षाबंधन का त्यौहार

अमित गोधा. शाबाश इंडिया

ब्यावर। वर्द्धमान ग्रुप के तत्वावधान में श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति द्वारा संचालित भंवर लाल गोठी पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल ब्यावर के विद्यालय प्रांगण में आज विद्यालय में पढ़ने वाले भाई बहनों ने एक दूसरे को रक्षासूत्र बांधकर रक्षाबंधन का पावन त्यौहार मनाया। इस अवसर पर विद्यालय में पढ़ रही बहनों ने अपने भाइयों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधा, माथे पर रोली का तिलक लगाया और साथ ही मिठाई खिलाकर आरती की तो भाइयों ने भी अपनी बहनों को गिफ्ट देकर उनकी रक्षा का संकल्प लिया। आज भाई बहनों की इस अटूट रिश्तों की मिसाल को सुभाष हाउस ने मनाकर सभी का दिल जीत लिया। विद्यालय में उपस्थित सभी अध्यापक अध्यापिकाओं ने भाव विभोर होकर तालियों की गर्जन के साथ उनका उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति के अध्यक्ष शांतिलाल नाबरिया, मंत्री डॉ नरेन्द्र पारख, निदेशक डॉ आर सी लोढा,नियंत्रक ललित कुमार लोढ़ा, प्राचार्य डॉ अनिल कुमार शर्मा, उप प्राचार्य धर्मेंद्र कुमार शर्मा, उप प्राचार्या श्रीमती सुनीता चौधरी ने रक्षाबंधन कार्यक्रम में भाग लेने वाले विद्यालय के सभी भाई बहनों का, हाउस मेंटर्स अध्यापक अध्यापिकाओं के साथ साथ अभिभावकों का उत्साहवर्धन किया।

रक्षाबंधन पर विशेष : जैन संस्कृति में रक्षा बंधन

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

राखी एक धर्मनिरपेक्ष पर्व है। इसे पूरे देश में मनाया जाता है। रक्षाबंधन पर्व को मनाने के पीछे अनेक पौराणिक कथानक जुड़े हुए हैं। जैनधर्म में भी इस पर्व को मनाने के पीछे एक कथानक जुड़ा है। उस कथानक के अनुसार, उज्जयिनी में श्रीधर्म नाम के राजा के चार मंत्री थे - बलि, बृहस्पति, नमुचि और प्रह्लाद। इन मंत्रियों ने शास्त्रार्थ में पराजित होने के कारण श्रुतसागर मुनिराज पर तलवार से प्रहार का प्रयास किया तो राजा ने उन्हें देश से निकाल दिया। चारों मंत्री अपमानित होकर हस्तिनापुर के राजा पद्म की शरण में आए। कुछ समय बाद मुनि अकंपनाचार्य 700 मुनि शिष्यों के संग हस्तिनापुर पहुंचे। बलि को अपने अपमान का बदला लेने का विचार आया। उसने राजा से वरदान के रूप में सात दिन के लिए राज्य मांग लिया। राज्य पाते ही बलि ने मुनि तथा आचार्य के साधना-स्थल के चारों तरफ आग लगवा दी। धुएं और ताप से ध्यानस्थ मुनियों को अपार कष्ट होने लगा, पर मुनियों ने अपना धैर्य नहीं तोड़ा। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक यह कष्ट दूर नहीं होगा, तब तक वे अन्न-जल का त्याग रखेंगे। वह दिन श्रावण शुक्ल पूर्णिमा का दिन था। मुनियों पर संकट जानकर मुनिराज विष्णु कुमार ने वामन का वेश धारण किया और बलि के यज्ञ में भिक्षा मांगने पहुंच गए। उन्होंने बलि से तीन पग धरती मांगी। बलि ने दान की हामी भर दी, तो विष्णु कुमार ने योग बल से शरीर को बहुत अधिक बढ़ा लिया। उन्होंने अपना एक पग सुमेरु पर्वत पर, दूसरा मानुषोत्तर पर्वत पर रखा और अगला पग स्थान न होने से आकाश में डोलने लगा। सर्वत्र हाहाकार मच गया। बलि के क्षमायाचना करने पर उन्होंने मुनिराज अपने स्वरूप में आए। विष्णु कुमार मुनि ने साधर्मी मुनियों की इस दिन रक्षा की थी, इसलिए साधर्मी, गुणी बंधु बान्धवों की रक्षा करना हम सबका परम कर्तव्य है। जैन धर्म में तो प्राणिमात्र की रक्षा करने का उपदेश दिया गया है। श्री विष्णुकुमार महामुनि ने विक्रियाऋद्धि के प्रभाव से उज्जयिनी से आकर बलि आदि मंत्रियों के द्वारा किये गये उपसर्ग को दूर कर मुनियों की रक्षा की थी, वह तिथि श्रावण शुक्ला पूर्णिमा थी, तभी से आज तक यह तिथि रक्षाबंधन पर्व के नाम से सारे भारत में विख्यात है। इस तरह सात सौ मुनियों की रक्षा हुई। सभी ने परस्पर रक्षा करने का बंधन बांधा। रक्षा बंधन पर्व की महत्ता इसीलिए तो है कि महान आत्मा ने रक्षा का महान कार्य सम्पन्न कर संसार के सामने रक्षा का वास्तविक स्वरूप रखा-जीवों की रक्षा, अहिंसा की रक्षा, धर्म की रक्षा। किंतु आज यह रक्षा उपेक्षित है, हम चाहते हैं सुरक्षा, मगर किसकी? मात्र अपनी और अपनी भौतिक सम्पदा की। आज यह स्वार्थपूर्ण संकीर्णता ही सब अनर्थों की जड़ बन गई है। मैं दूसरों के लिए क्यों चिंता करूं, मुझे बस मेरे जीवन की चिंता है। मैं, मेरा, अपना, आज का सारा व्यवहार यहीं तक केन्द्रित हो गया है। रक्षापना समाप्त हो गया है? स्वयं की परवाह न करते हुए अन्य की रक्षा करना- यह इस पर्व के मानने का वास्तविक रहस्य है। विष्णुकुमार मुनि ने बंधन को अपनाया। अपने पद को छोड़कर मुनियों की रक्षार्थ गए। ऐसा करने में उनका प्रयोजन धर्म प्रभावना और वात्सल्य था। रक्षा के लिए जो बंधन है, वह सभी के लिए मुक्ति का कारण है। इस तरह रक्षाबंधन का पर्व समाज में प्रेम , वात्सल्य, रक्षा और भाईचारा बढ़ाने का कार्य करता है । संसार भर में यह अनूठा पर्व है । इसमें हमें देश की प्राचीन संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। जीवनभर नैतिक, सांस्कृतिक और अध्यात्मिक मूल्य भी इस पर्व में शामिल हैं। यह भारत की गुरु-शिष्य परंपरा का प्रतीक त्योहार भी है । यह दान के महत्त्व को प्रतिष्ठित करने वाला पावन त्योहार है । यह वात्सल्य का पर्व भी है, यह मुनि रक्षा का पर्व भी है। यह भाई- बहिन के अटूट प्रेम प्रतीक पर्व भी है। रक्षाबंधन पर्व पर प्रत्येक श्रावक को धार्मिक, सामाजिक एवं लोगोपकारी कार्यों की सम्पन्नता हेतु यथेष्ट दान अवश्य देना चाहिए। यह एक अद्भुत पर्व है। यह दिन बंधन का दिन होने पर भी पर्व माना जाता है। पर्व या उत्सव में तो स्वतंत्रता होती है। आज का दिन तो बंधन का दिन है, बंधन भी सामान्य बंधन नहीं, प्रेम का बंधन। यह वात्सल्य का प्रतीक है। रक्षा बंधन अर्थात रक्षा के लिए बंधन आजीवन बडे उत्साह के साथ चलता है। सामान्य बंधन से तो मुक्ति सम्भव है, परंतु यह बंधन है जिससे मुक्ति नहीं। यह बंधन मुक्ति में सहायक है, क्योंकि यह रक्षा का बंधन है। जीवों पर संकट आते हैं, सभी अपनी शक्ति अनुसार उनका निवारण करते है, परंतु सभी ऐसा नहीं कर पाते। मनुष्य ही ऐसा विवेकशील प्राणी है जो अपने और दूसरों के संकट को दूर करने में समर्थ है। मनुष्य ही अपनी बुद्धि और शारीरिक सामार्थ्य से अपनी और दूसरों की रक्षा कर सकता है। रक्षा के लिए ही धर्म का विश्लेषण है कि जीवों की रक्षा किस प्रकार करें, उनके विकास के लिए क्या प्रयत्न करें? हमारे द्वारा सम्पादित कार्य बाहर और भीतर से एक समान होना चाहिए। रक्षा बंधन को सच्चे अर्थों में मनाना है तो बाहर और भीतर से एक समान होना चाहिए। रक्षा बंधन को सच्चे अर्थों में मनाना है तो अपने भीतर करूणा को जाग्रत करें। अनुकम्पा, दया और वात्सल्य का अवलम्बन लें। रक्षा बंधन का अर्थ है कि हममें जो करूणाभाव है वह तन-मन धन से अभिव्यक्त हो। यह एक दिन के लिए नहीं, सदैव हमारा स्वभाव बन जाय, ऐसी चेष्टा करना चाहिए।सत्वेषु मैत्री-प्राणी मात्र के प्रति मित्रता का भाव हमरे जीवन में उतरना चाहिए। तभी हमारा यह पर्व मनाना सार्थक है।

डॉ. सुनील जैन संचय
ज्ञान-कुसुम भवन,नेशनल कान्वेंट स्कूल के सामने, गांधीनगर, नईबस्ती,ललितपुर 284403, उत्तर प्रदेश
मोबाइल, 9793821108
ईमेल- suneelsanchay@gmail.com
(आध्यात्मिक चिंतक व जैनदर्शन के अध्येता)

11वां प्रतिभा सम्मान समारोह शाहगढ़ में

पत्रिका विमोचन के साथ प्रचार प्रसार तेज

मनीष विद्यार्थी. शाबाश इंडिया

शाहगढ़। परम पूज्य आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय सागर, भारतीय स्टेट बैंक शाखा शाहगढ़ के प्रायोजक में, तहसील प्रेस क्लब मध्यप्रदेश रजि.के तत्वावधान में 11वां प्रतिभा सम्मान समारोह, ज्ञानोदय प्रेस अवार्ड, कैरियर काउंसलिंग एवं पत्रकार सम्मेलन कार्यक्रम बड़ा बाजार पुरानी गल्ला मंडी शाहगढ़ से संपन्न होगा। इस आयोजन सफलतम 10 वर्ष हो गये है । बंडा विधानसभा स्तरीय इस आयोजन में अब तक 2500 से ज्यादा छात्र- छात्राऐं और 100 से ज्यादा उपाधियों से समाज के प्रतिभावान प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया है। इस कार्यक्रम की चर्चा बण्डा विधानसभा स्तरीय आयोजन के लिए प्रसिद्ध है। कार्यक्रम निर्देशक प्राचार्य पं अशोक तिवारी ,प्रेस क्लब अध्यक्ष अधिमान्य पत्रकार प्रकाश अदावन ,कार्यक्रम संयोजक जर्नलिस्ट मनीष विद्यार्थी, कोषाध्यक्ष एडवोकेट देव संधेलिया ने पत्रिका विमोचन के साथ कार्यक्रम प्रचार प्रसार का कार्य प्रारंभ कर दिया है शाहगढ़, पत्रिका एवं फार्म, हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी स्कूल में दिए गए हैं।

गुरूभगवंतो की जन्मोत्सव के तृतीय दिवस 1500 जरूरतमंद भाई बहनों को अलग -अलग जगह पर और भोजन एवं वस्त्र प्रदान किये गये

मन पर विजय प्राप्त करने वाला मनुष्य इस जगत को जीत सकता है : महासती धर्मप्रभा

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया

चैन्नई। मन पर विजय प्राप्त करने वाला मनुष्य जगत को जीत सकता है। मंगलवार साहूकार पेठ जैन भवन मे गुरूद्वय जन्मजयंती कार्यक्रम तृतीय दिवस महासती धर्मप्रभा ने श्रध्दांलूओ को धर्म उपदेश प्रदान करतें हुए कहा कि जिसने मन को जीत लिया तो उसे सब कुछ मिल जाएगा और हमारा मन काबू मे नहीं हुआ तो हमारे जीवन मे कभी भी सुख नहीं आने वालें है। मन वश मे होने पर ही हमारे सारे दुखः खत्म हो सकते है। और हम जीवन में सुखो प्राप्त कर सकते है ।लेकिन हमारे मन की गति सूर्य की किरणों से कहि लाख गुणा तीव्र है। जो हमारे मन को स्थिर नहीं होने देती है। अगर हम अभ्यास करे तो हम इस मन को स्थिर करके शांत सकतें है। बस जरूरत है हमे इस मन पर अंकुश और वश करने की,नहीं तो यह हमारा मन हमारे जीवन का पतन करने मे ज्यादा देर नहीं लगाने वाला है ।मन हमारा साफ है, तो हमे तन को साफ करने की हमे जरूरत नहीं है और ना ही तीर्थ यात्रा पर जाने की आवश्यकता है और मन हमारा मैला है तो हम चारों धाम की तीर्थ यात्रा करले फिर भी हमारे पाप नहीं धूलने वालें है। हमारी आत्मा को हम उज्जवल बनाएंगे तभी हम जीवन मे सुख भोगने हैं।

राखी पर मोदी का रिटर्न गिफ्ट, गैस सिलेंडर दो सौ रुपए सस्ता

उज्जवल योजना वालों को चार सौ रुपए की सब्सिडी

सुशील चौहान. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। केन्द्र सरकार ने देश की महिलाओं को राखी पर गैस सिलेंडर दो सौ रुपए सस्ता करने का उपहार दिया हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश की महिलाओं को राखी के रिटर्न गिफ्ट में गैस सिलेंडर सस्ते के रूप में उपहार दिया। केन्द्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने यह घोषणा प्रेस कॉन्फ्रेंस में की। ठाकुर ने बताया कि उज्जवला योजना के लाभान्वितों को अब चार सौ रुपए का लाभ होगा। उन्हें पहले दो सौ रुपए की सब्सिडी मिल रही थी अब दो सौ रुपए की ओर मिलेगी। यानी उज्जवला योजना वालों को चार सौ का लाभ मिलेगा। उज्जवला योजना के 75 लाख कनेक्शन और दिए जाएंगे। दूसरी ओर महिलाओं ने तीज त्यौहार के मौके पर प्रधानमंत्री मोदी की ओर से दी गई इस सौगात का स्वागत किया हैं।

नेह पर्व रक्षाबंधन पर

सुखी रहें, प्रति पल मुस्काएँ.
इंजिनियर अरुण कुमार जैन.
बचपन की स्मृतियाँ प्यारी,
मेरी बहिनें सबसे न्यारी.
एक बड़ी व एक हैं छोटी,
नेह, दुलार व आदर देतीं.
हाथ पकड़ चलना सिखलाया,
तुम्हें गोद में साथ खिलाया.
प्रेम, नेह, झगड़ा जीवन था,
इंद्रधनुष सा अनुरागी था.
पढ़े, बढ़े हम मिलकर बहिना,
साथ साथ हिलमिलकर रहना.
फिर आगे का भी जीवन था,
दीदी को उनके घर भेजा.
नव संसार बना था उनका,
नव उद्यान सजा था उनका.
छोटी बहिन गयी फिर नवगृह,
प्यारी निधि नव घर की बनकर.
आँखों में आँसू आये थे,
नेह, प्रेम ममता लाये थे.
माँ का घर तो अब सूना था,
नये सृजन का नूतन युग था.
नन्हे मुन्ने थे बगिया में,
हर्षित करते थे हम सबको.
बड़े हुए, हम जैसे मिलकर,
प्यारे सपनों को पर देकर.
उनके भी संसार सृजित हैं,
अपनी धरती व अम्बर हैं.
सब अपनों में व्यस्त मस्त हैं,
नेह, प्रेम अनुराग बद्ध हैं.
जीवन चलता, सतत चलेगा,
नेह, प्रेम, अनुराग बढ़ेगा.
सुख, दुःख आते व जाते हैं,
हर्ष, प्रेम, विपदा लाते हैं.
हम सब मिलकर आगे बढ़ते,
हर पल क्षण का स्वागत करते.
बचपन याद बहुत आता है,
सुखद स्मृतियां संग लाता है.
जब भी जहाँ कहीं बहिना हों,
नेह, प्रेम, ममता झरना हों.
सुखी रहें प्रति पल मुस्काएँ,
तम को आलोकित कर पाएं.
नेहपर्व रक्षाबंधन पर,
राखी के पावन धागों पर.
आदर व अनुराग बढ़ाएं,
संस्कृति अपनी अमर बनायें.
हर बहिना हो प्यारी न्यारी,
हर भाई उन पर बलिहारी.
नूतन एक संसार बनेगा,
नेह, प्रेम, ममता जहाँ होगा.

अमृता हॉस्पिटल फरीदाबाद
7999469175

700 मुनियों की रक्षा दिवस पर रक्षा बंधन तथा श्रेयांश नाथ निर्वाणोत्सव मनाएंगे

आर्यिका श्री विशेष मति माताजी के सानिध्य में होगा विशेष पूजन विधान

जयपुर. शाबाश इंडिया। जनकपुरी- ज्योति नगर जैन मन्दिर में बुधवार 30 अगस्त को को प्रातः नित्य अभिषेक, शान्ति धारा, सामूहिक पूजन के बाद आर्यिका श्री विशेष मति माताजी के सानिध्य में तीर्थंकर श्रेयांश नाथ का निर्वाण लाडू चढ़ाया जाएगा एवं रक्षा बंधन विधान मण्डल पर सात सो मुनिराजो के श्रीफल सहित सात सो अर्घ्य चढ़ाये जाएंगे। आर्यिका जी का आशीर्वचन का कार्यक्रम होगा तथा शाम को आरती के बाद 48 दीपक से सामूहिक भक्तामर दीप अर्चना की जाएगी ।

संघर्ष से कतराना मनुष्य की सबसे बड़ी कायरता : गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी

गुंसी, निवाई. शाबाश इंडिया। गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माताजी ने धर्म पिपासुओं को धर्मोपदेश देते हुए कहा कि गलती जिंदगी का एक पेज है, पर मानव जिंदगी पूरी किताब है । जरूरत पड़ने पर गलती का एक पेज फाड़ देना पर एक के लिए पूरी किताब मत खो देना। जिंदगी में इतनी गलतियां न करो कि पेंसिल से पहले रबर घिस जाए और रबड़ को इतना मत घिसो की जिंदगी का पेज फट जाए। अपने आप को बदलो। अपने आप को बदलने में डरना और संघर्ष में कतराना मनुष्य की सबसे बड़ी कायरता है। पद्मावती महिला मंडल निर्माण नगर जयपुर की ओर से सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी में श्री शांतिनाथ महामंडल विधान रचाया गया। गुरु मां के सान्निध्य में प्रातः कालीन अभिषेक, शांतिधारा, पूजन का आयोजन निर्विघ्न संपन्न हुआ।

11वां प्रतिभा सम्मान समारोह शाहगढ़ में, पत्रिका विमोचन के साथ प्रचार-प्रसार तेज

मनीष विद्यार्थी. शाबाश इंडिया

शाहगढ़। परम पूज्य आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय सागर, भारतीय स्टेट बैंक शाखा शाहगढ़ के प्रायोजक में, तहसील प्रेस क्लब मध्यप्रदेश रजि.के तत्वावधान में 11वां प्रतिभा सम्मान समारोह, ज्ञानोदय प्रेस अवार्ड, कैरियर काउंसलिंग एवं पत्रकार सम्मेलन कार्यक्रम बड़ा बाजार पुरानी गल्ला मंडी शाहगढ़ से संपन्न होगा । इस आयोजन सफलतम 10 वर्ष हो गये है । बंडा विधानसभा स्तरीय इस आयोजन में अब तक 2500 से ज्यादा छात्र- छात्राऐं और 100 से ज्यादा उपाधियों से समाज के प्रतिभावान प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया है। इस कार्यक्रम की चर्चा बण्डा विधानसभा स्तरीय आयोजन के लिए प्रसिद्ध है। कार्यक्रम निर्देशक प्राचार्य पं अशोक तिवारी ,प्रेस क्लब अध्यक्ष अधिमान्य पत्रकार प्रकाश अदावन ,कार्यक्रम संयोजक जर्नलिस्ट मनीष विद्यार्थी, कोषाध्यक्ष एडवोकेट देव संधेलिया ने पत्रिका विमोचन के साथ कार्यक्रम प्रचार प्रसार का कार्य प्रारंभ कर दिया है शाहगढ़, पत्रिका एवं फार्म, हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी स्कूल में दिए गए हैं ।

आपाके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

श्रावक कहलाना आसान बनना बहुत मुश्किल, त्याग में ही जीवन की सार्थकता- चेतनाश्रीजी म.सा

समीक्षाप्रभाजी म.सा. ने दिलाई कई श्रावक-श्राविकाओं को श्रावक के 12 व्रत स्वीकार करने की प्रतिज्ञा। महासाध्वी इन्दुप्रभाजी म.सा. के सानिध्य में गुरू द्वय पावन अष्ट दिवसीय जन्मोत्सव का छठा दिन

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। श्रावक कहलाना बहुत आसान होता है लेकिन बनना मुश्किल होता है। श्रावक के 12 व्रत स्वीकार करने वाला ही सच्चा श्रावक-श्राविका होते है। नियम केवल स्वीकार ही नहीं करने बल्कि जीवनभर उनकी पालना करना भी जरूरी है। जीवन की सार्थकता त्याग में ही है। हमने परमात्मा महावीर प्रभु ओर अपनी आत्मा की साक्षी में ये श्रावक व्रत स्वीकार किए है जिनका पालन करना है। ये विचार भीलवाड़ा के चन्द्रशेखर आजादनगर स्थित रूप रजत विहार में मंगलवार को श्री अरिहन्त विकास समिति के तत्वावधान में मरूधर केसरी मिश्रीमलजी म.सा. की 133वीं जयंति एवं एवं लोकमान्य संत शेरे राजस्थान रूपचंदजी म.सा. की 96वीं जयंति के उपलक्ष्य में अष्ट दिवसीय गुरू द्वय पावन जन्मोत्सव के छठे दन मरूधरा मणि महासाध्वी श्रीजैनमतिजी म.सा. की सुशिष्या महासाध्वी इन्दुप्रभाजी म.सा. के सानिध्य में आगम मर्मज्ञा डॉ. चेतनाश्रीजी म.सा. ने धर्मसभा में व्यक्त किए। उन्होंने श्रावक व्रत स्वीकार करने वालों की अनुमोदना करते हुए गुरूदेवों की भक्ति व साधना अनुकरणीय थी। उनके जीवन से जितनी प्रेरणा ग्रहण करें कम होगा। इससे पूर्व तत्वचिंतिका डॉ. समीक्षाप्रभाजी ने श्रावक व्रत प्रतिज्ञा सम्पन्न कराई। इस दौरान महासाध्वी इन्दुप्रभाजी म.सा. के सानिध्य में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने श्रावक के 12 व्रत स्वीकार करने की प्रतिज्ञा की। उन्होंने कहा कि व्रत स्वीकार करने के बाद अब आप व्रति श्रावक बन गए है। बिना व्रत स्वीकार किए कोई सच्चा श्रावक नहीं हो सकता। श्रावक व्रत स्वीकारने से भव भ्रमण मिटकर तीर्थंकर गौत्र का बंध हो सकता है। उन्होंने कहा कि व्रत स्वीकार करने वाले श्रावक-श्राविकाओं को माह में एक बार इन व्रतों की पुस्तक अवश्य पढ़नी है ताकि उन्हें याद रहे कि हमने क्या त्याग किए ओर किन नियमों को स्वीकार किया है। हम इन चीजों का उपयोग नहीं करते उनका त्याग कर सकते है। महासाध्वी इन्दुप्रभाजी म.सा. ने कहा कि गुरूदेव मरूधर केसरी पूज्य मिश्रीमलजी म.सा. ने उनके जीवन को संवारा है। गुरूदेव ने संयम स्वीकार करके अपने साथ दूसरों का भी कल्याण किया। संत हमेशा परमार्थ के लिए कार्य करते है। मधुर व्याख्यानी डॉ. दर्शनप्रभाजी म.सा. ने कहा कि संतों का जीवन हमेशा प्रेरणा देने वाला होता है। गुरू मिश्री रूप रजत जैसे संतों का आशीर्वाद जिनको प्राप्त हो गया उनका जीवन धन्य हो गया। धर्मसभा में तरूण तपस्वी हिरलप्रभाजी म.सा. ने गीत ह्यछोड़ कर संसार जब तू जाएगा कोई न साथी तेरा साथ निभाएगाह्ल की प्रस्तुति देते हुए कहा कि इस संसार में कोई भी रिश्ता अपना नहीं है। सारे रिश्ते यहीं छूट जाएंगे एक धर्म का रिश्ता है जो हमेशा साथ आएगा। इसलिए जीवन में गुरूओं का आशीर्वाद लेकर धर्म करते रहे। धर्मसभा में आदर्श सेवाभावी दीप्तिप्रभाजी म.सा. का भी सानिध्य रहा। धर्मसभा में जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा की राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्पा राजेन्द्र गोखरू ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि चन्द्रशेखर आजादनगर के रूप रजत विहार में पहली बार हो रहे चातुर्मास में जिनशासन भक्ति का जो नजारा है वह सराहनीय है। उन्होंने कहा कि चातुर्मास में जो भी प्रतिक्रमण कंठस्थ करेंगा या मासखमण की तपस्या करेंगा उनका कॉन्फ्रेंस की ओर से चातुर्मास समाप्ति के बाद सम्मान किया जाएगा। सुश्रावक ज्ञानचंदजी लोढ़ा, महावीरजी धोका ने भी विचार व्यक्त किए। धर्मसभा का संचालन युवक मण्डल के मंत्री गौरव तातेड़ ने किया। अतिथियों का स्वागत श्री अरिहन्त विकास समिति के अध्यक्ष राजेन्द्र सुकलेचा एवं अन्य पदाधिकारियों द्वारा किया गया। धर्मसभा में अष्ट दिवसीय गुरू द्वय पावन जन्मोत्सव के तहत 24 से 28 अगस्त तक हुए कार्यक्रमों के आधार पर तैयार डिजीटल अंक की प्रति का विमोचन करते हुए उसे साध्वीवृन्द के चरणों में समर्पित किया गया। इस अवसर पर लक्की ड्रॉ के माध्यम से चयनित 11 भाग्यशाली श्रावक-श्राविकाओं को पुरस्कृत किया गया।

दिगम्बर जैन चन्द्र प्रभ चैरिटेबल ट्रस्ट दुर्गापुरा जैन मंदिर जी में डां. 'मणि' नि:शुल्क सेवा देंगें

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगम्बर जैन चन्द्र प्रभ चैरिटेबल ट्रस्ट (दुर्गापुरा जैन मंदिर जी में)के द्वारा संचालित होम्योपैथिक चिकित्सालय में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वरिष्ठ होम्योपैथ डां.एम.एल जैन श्रमणिश्र दिनांक 31/8/23 से (भाद्रपद मास)प्रतिदिन प्रातः 8-9 अपनी निःशुल्क सेवायें देंगे । डां श्रमणिश्र दिगम्बर जैन मंदिर जी जग्गा की बावडी में गत 35वर्ष से निःशुल्क चिकित्सालय चला रहे हैं व रविवार को ये व इनके सहायक अपनी सेवायें देते हैं। डां श्रमणिश्र शुरू में राजकीय चिकित्सालय में बीकानेर/भांकरोटा/मोतीडूंगरी में अपनी सेवायें दे चुके हैं। राजस्थान के प्रथम बैच के बी एम एस होने के साथ ही ये यहां सायपुरा सांगानेर की विश्व की प्रथम होम्योपैथिक विश्वविद्यालय में 10 वर्ष तक ऐकेडमिक मेम्बर रहे । स्वयं पीएचडी होने के कारण इन्होंने विश्वविद्यालय में 3 विषय में पीएचडी पाठ्यक्रम बना कर दिया,जिसमें आज छात्र पीएचडी कर रहे हैं ।इन्हें अब तक सैंकडों राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय अवार्ड मिल चुके हैं तथा इनकी ख्याति राष्ट्रीय स्तर तक ही सीमित न होकर अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इनके मरीज विदेशों में भी इनसे चिकित्सा परामर्श व दवाईयां ले रहें हैं।इनके अन्डर में दर्जनों छात्रों ने पीएचडी का रजिस्ट्रेशन कराया व डिग्री ली है । आप राजस्थान विश्वविद्यालय व कोटा ओपन यूनिवर्सिटी में भी रह चुके हैं। आपके एक हजार के करीब होम्योपैथिक व विभिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित हो चुके हैं।आप चर्मरोग, दमा व किडनी स्टोन में स्पेशलिस्ट हैं।

इंदौर जैसवाल जैन उप. समाज का मिलन समारोह संपन्न

सजातीय बंधुओं का एकजुट होने का प्रथम प्रयास

मनोज नायक. शाबाश इंडिया

इंदौर। श्री दिगम्बर जैसवाल जैन उपरोचियां समाज इंदौर के मिलन समारोह में सजातीय बंधुओं की एकजुटता के लिए प्रथमवार प्रयास किया गया। मुरेना वाले सुरेशचंद बाबूजी ने जानकारी देते हुए बताया कि इंदौर जैसे महानगर में जैसवाल जैन समाज के लगभग 90 परिवार निवास करते हैं । लेकिन किसी का भी आपस में मेल मिलाप या परिचय नहीं हैं । इस वावत किसी ने आजतक प्रयास भी नहीं किया । जैसवाल जैन उपरोचियाँ समाज की सेवा भावी संस्था अविवाहित प्रतिभाएं प्रस्तुति समूह के क्षेत्रीय संयोजक गौरव जैन ''मोंटी'' ने इस हेतु प्रथम प्रयास किया है । गौरव जैन ने श्री दिगम्बर जैसवाल जैन उपरौंचिया समाज इंदौर के साधर्मी बंधुओं की एक बैठक आहूत की । जिसे मिलन समारोह का नाम दिया गया । अपना स्वीट्स (विजय नगर) इंदौर में आयोजित बैठक में इंदौर में निवासरत 90 परिवारों से करीब 25- 30 परिवारो के सदस्यों की उपस्थिति दर्ज की गई । जिसमें सभी के द्वारा एक दूसरे का परिचय किया गया और सभी की भावना थी कि सभी एकजुट होकर आगे की रूपरेखा तैयार की जावे और हर माह के प्रथम रविवर को तय किए गए स्थान पर एक अनिवार्य मिलन बैठक की जावे और हर रविवार को तय किये गए जिन मंदिर जी में इच्छुक व्यक्ति अभिषेक, शांतिधारा और पूजन सामुहिक रूप से करने के माध्यम से मिलेंगें । मुरेना वाले गौरव जैन के इस सफल योजना की सभी ने सराहना की। बैठक में ऋषभ जैन, प्रदीप जैन, संजीव जैन, अमित जैन, राजेश जैन, सुरेशचंद बाबूजी, मनीष जैन, अमित जैन, रॉबिन जैन, बंटी जैन, चक्रेश जैन, ऋषभ जैन, सिन्धु उपग्रह, राजीव जैन, गिरनारी लाल, सनी जैन, सौरव जैन, राकेश जैन सहित अनेकों बंधु उपस्थित थे ।

अंतरिक्ष विज्ञान के लिए सबसे उपयुक्त भाषा संस्कृत सिद्ध हुई है : प्रो. जयकुमार

लाडनूं में संस्कृत दिवस पर समारोह का आयोजन

लाडनूं. शाबाश इंडिया। संस्कृत दिवस के अवसर पर यहां आयोजित संस्कृत समारोह उत्सव में मुख्य अतिथि प्रो. जयकुमार जैन जयपुर ने संस्कृत को विश्व की प्राचीनतम भाषा बताते हुए बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन 1977 में यह स्वीकार किया कि संस्कृत सभी भाषाओं के निकट है। नासा ने भी अपने प्रकाशन के जुलाई 1987 के अंक में कम्प्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा संस्कृत को माना है। अंतरिक्ष में संदेश भेजे जाने के लिए संस्कृत सबसे बेहतर भाषा है। अंग्रेजी व अन्य भाषाओं में संदेश भेजे जाने पर उनमें शब्द आगे-पीछे और गलत हो जाते हैं, लेकिन संस्कृत में भेजे संदेश का अर्थ यथावत रहता है। अंतरिक्ष विज्ञान के लिए संस्कृत आवश्यक है और संस्कृत साहित्य में समस्त अंतरिक्ष विज्ञान समाहित है। वैदिक साहित्य संस्कृत में है और जैन साहित्य भी बहुतायत से संस्कृत में है। उन्होंने यहां जैन विश्वभारती संस्थान के संस्कृत व प्राकृत विभाग द्वारा मंगलवार को आयोजित इस समारोह में बताया कि सम्पूर्ण जगत की प्राचीन भाषाओं में संस्कृत के साथ प्राकृत का भी महत्व है। भारत के प्राचीन शिलालेखों में प्राकृत भाषा का प्रयोग हुआ था। सम्राट अशोक महान और कलंग विजेता खारवेल के शिलालेख प्राकृत में मिलते हैं। संस्कृत के साथ प्राकृत के अध्ययन को भी महत्व दिया जाना चाहिए। उन्होंने जहां साहित्यिक भाषा संस्कृत को बताया, वहीं लोकभाषा के रूप में प्राकृत को समानान्तर बताया।

विज्ञान की भाषा है संस्कृतः जसवंतगढ के तापड़िया संस्कृत महाविद्यालय के प्रो. चन्द्रशेखर ने कार्यक्रम में सारस्वत अतिथि के रूप में अपना सम्बोधन संस्कृत में देते हुए कहा कि प्राचीन काल में श्रावणी पर्व पर शाला में प्रवेश की व्यवस्था थी। प्रवेश के बाद संस्कृत में भी समस्त आचरण किए जाते थे। इसी दिन को अब संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने इस विज्ञान युग में और वायुयान युग में संस्कृत को विज्ञान की भाषा बताया और कहा कि हमारा प्राचीन ज्ञान-विज्ञान बेहतर था। हमारे यहां तो पुष्पक विमान के मात्र चिन्तन से संचालन का उल्लेख मिलता है। उन्होंने प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक बोधायन का उल्लेख करते हुए कहा कि जो पाइथागोरस ने खोज की वह तो बोधायन बहुत पहले कर चुके थे। उन्होंने संस्कृत को तनाव व रुग्णता दूर करने वाली भाषा बताया। संस्कृत भारती संस्था के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि संस्कृत भारती का मुख्य उद्देश्य है, संस्कृत का प्रचार-प्रसार करना और संस्कृत-संभाषण सिखाकर इसे फिर से व्यावहारिक भाषा बनाना।

समस्त जिनशासन के लिए ऐतिहासिक एवं अविस्मरणीय क्षण

प.पू. आचार्य देव श्री विजयरत्नाचल सूरि महाराज आदि ठाणा ने की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात।

राजेश जैन दद्दू. शाबाश इंडिया

नई दिल्ली। प.पू. आचार्य देव श्री विजयरत्नाचल सूरि महाराज आदि ठाणा ने राष्ट्रपति भवन में की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात। अनेक वर्षों के पश्चात श्वेतांबर जैन आचार्य श्री का हुआ राष्ट्रपति भवन में पदार्पण। मरुधर रत्न प.पू. आचार्य देव श्री रत्नाकरसूरि महाराज के शिष्य आचार्य श्री विजयरत्नाचल सूरी महाराज आदि साधु साध्वीने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति से मुलाकात की। राष्ट्रपति ने कहा कि आज तक जैन साधु की त्याग एवं तपस्या के बारे में बहुत कुछ सुना था लेकिन आज प्रथम बार उनके दर्शन हुए है यह मेरा परम सौभाग्य है ।वे इतनी धूप में

नंगे पांव चलकर यहां आए हैं। आज का विज्ञान भी कहता है कि नंगे पाव चलने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है।अंग्रेजो ने हमे चप्पल पकड़ा दी है वरन पहले और आज भी गांव के लोग नंगे पांव ही चलते हैं।मुझे भी नंगे पांव ही चलना अच्छा लगता है लेकिन आज की तारीख में यह संभव नहीं है। आप सर के बाल भी खींचकर निकालते हैं।आपकी तपस्या को मैं नमन करती हूं। इस दौरान आचार्य श्री ने उन्हे संबोधित करते हुए कहा कि संस्कृति की सुरक्षा से ही भारत सही मायने में समृद्ध एवं विश्वगुरु बन सकता है। अपनी प्राचीन धरोहरों की सुरक्षा से ही संस्कृति की रक्षा हो सकती है। आचार्य श्री ने उन्हें जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के 2550वे निर्वाण कल्याण के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में जुड़ने का आमंत्रण भी दिया। इस दौरान अहमदाबाद एलडी इंस्टिट्यूट के डायरेक्टर डॉ. जितेंद्र बी. शाह ने स्टेचू ऑफ यूनिटी केवड़िया कॉलोनी के आसपास एक विशिष्ट एवं वैश्विक जैनधर्म का केंद्र बनाने हेतु आवेदन पत्र भी दिया। राष्ट्रपति भवन में सबके आकर्षण का केंद्र बालमुनि श्री हेमसृष्टि महाराज रहे। इतनी छोटी सी उम्र में दीक्षा लेकर वो राष्ट्रपति भवन में पधारे थे। स्वयं महामहिम राष्ट्रपति ने आश्चर्यचकित होकर पूछा कि क्या आपने भी दीक्षा ले ली है? जब बालमुनि ने उन्हे हा कहा तो उनकी आंखे भर आई।